गाँधीजी के अनुसा

गाँधीजी ने शिक्षा का अर्थ समझाते हुए हरिजन में लिखा
तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण
विकास से है, साक्षरता शिक्षा की न तो अन्तिम सीढ़ी है और न ही प्रथम
सोपान। यह तो पुरुष-स्त्री को शिक्षित करने का एक साधन है, साक्षरता स्वयं
शिक्षा नहीं कहला सकती।'' उनका विश्वास था कि शिक्षा को बालक की समस्त
शक्तियों का विकास करना चाहिए, जिससे वह पूर्ण मानव बन जाए। पूर्ण मानव
का अर्थ बालक के व्यक्तित्व के चारों तत्त्वों—शरीर, हृदय, मन तथा आत्मा के
समुचित विकास से है।

गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा के द्वारा बालकों में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् और विश्व बन्धुत्व आदि की भावनाओं का विकास करना चाहता है तथा ऐसे नागरिक उत्पन्न करना चाहते हैं, जो स्वावलम्बी हों, आत्माभिमानी और संयमी हों। **गाँधीजी** ने लिखा है कि "उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है, जिसका शरीर इतना सधा हुआ है कि वह उसके नियन्त्रण में रह सके और आराम व आसानी के साथ उसका बताया हुआ काम करे, उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है, जिसकी बुद्धि शुद्ध है, शान्त और न्यायदर्शी है, उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसका मन प्रकृति के नियमों से भरा है, जिसकी इन्द्रियाँ अपने वश में हैं, जिसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध है और आदमी नीच आचरण को धिक्कारता है तथा दूसरों को अपने जैसा समझता है। ऐसा आदमी सचमुच में शिक्षा पाया हुआ माना जाता है।''

गाँधीजी के शिक्षा के आधारभूत

झगड़े हो गए। इन दंगों को
30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने गोली मारकर इनकी हत्या कर दी।

23.07.21, S.B.Ch
SC-101
Sem-1

गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ

गाँधीजी ने शिक्षा का अर्थ समझाते हुए **हरिजन** में लिखा था कि "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है, साक्षरता शिक्षा की न तो अन्तिम सीढ़ी है और न ही प्रथम सोपान। यह तो पुरुष-स्त्री को शिक्षित करने का एक साधन है, साक्षरता स्वयं शिक्षा नहीं कहला सकती।" उनका विश्वास था कि शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना चाहिए, जिससे वह पूर्ण मानव बन जाए। पूर्ण मानव का अर्थ बालक के व्यक्तित्व के चारों तत्त्वों—शरीर, हृदय, मन तथा आत्मा के समुचित विकास से है।

गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा के द्वारा बालकों में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् और विश्व बन्धुत्व आदि की भावनाओं का विकास करना चाहता है तथा ऐसे नागरिक उत्पन्न करना चाहते हैं, जो स्वावलम्बी हों, आत्माभिमानी और संयमी हों। **गाँधीजी** ने लिखा है कि "उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है, जिसका शरीर इतना सधा हुआ है कि वह उसके नियन्त्रण में रह सके और आराम व आसानी के साथ उसका बताया हुआ काम करे, उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है, जिसकी बुद्धि शुद्ध है, शान्त और न्यायदर्शी है, उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसका मन प्रकृति के नियमों से भरा है, जिसकी इन्द्रियाँ अपने वश में हैं, जिसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध है और आदमी नीच आचरण को धिक्कारता है तथा दूसरों को अपने जैसा समझता है। ऐसा आदमी सचमुच में शिक्षा पाया हुआ माना जाता है।"

गाँधीजी के शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त

गाँधीजी की शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं

- शिक्षा द्वारा बालक में शारीरिक, मानसिक तथा चारित्रिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है।
- शिक्षा का बालक-बालिकाओं में निहित समस्त मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए। 7 से 14 वर्ष के बालकों की शिक्षा नि:शुल्क तथा अनिवार्य होनी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए ताकि छात्र में उसके प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो सके।
- शिक्षा ऐसी हो जिसे प्राप्त करके बालक किसी-न-किसी व्यवसाय में लग जाए। किसी उद्योग के द्वारा शिक्षा को स्वावलम्बी बनाना चाहिए।
- बालक की शिक्षा किसी लाभप्रद हस्तकला या दस्तकारी से प्रारम्भ होनी चाहिए, जिससे वह अपने भावी जीवन में अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके। स्कूल ऐसा होना चाहिए जहाँ बालक अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा नई-नई खोजें कर सके।